The Research Dialogue
International Open Access, Peer Reviewed & Refereed Journal
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 5 | Issue 3 | October 2026
ISSN: 2583-438X (Online)
Impact Factor: SJIF: 5.087, RPRI 4.79/6.69
Website: https://theresearchdialogue.com/

श्रीरामचरितमानस में विवेकवान नेतृत्व और निर्णय क्षमता का अध्ययन

डॉ. वागीश दुबे

सहायक प्राध्यापक, आदित्य प्रकाश जालान शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, कुदलुम, नगड़ी, राँची, झारखंड।

Email id: vageeshdubey0@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i3.24

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 12-09-2026

Accepted: 18-10-2026

Published: 29-10-2026

Corresponding Author:
डॉ. वागीश दुबे

Keywords: श्रीरामचरितमानस, विवेकवान नेतृत्व, निर्णय क्षमता, लोककल्याण

OPEN ACCESS

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा में श्रीरामचरितमानस केवल एक धार्मिक एवं साहित्यिक ग्रंथ नहीं, बल्कि मानवीय आचरण, कर्तव्यबोध, नैतिक विवेक और आदर्श नेतृत्व के विविध आयामों को समझने का महत्त्वपूर्ण स्रोत भी है। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित इस ग्रंथ में श्रीराम, भरत, लक्ष्मण, हनुमान और विभीषण जैसे पात्रों के माध्यम से विभिन्न परिस्थितियों में निर्णय लेने, कर्तव्य एवं व्यक्तिगत हित के बीच संतुलन स्थापित करने तथा नैतिक संकटों का समाधान करने की प्रेरणा मिलती है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य श्रीरामचरितमानस में अभिव्यक्त विवेकवान नेतृत्व की अवधारणा का विश्लेषण करना तथा नैतिक द्वंद्वों के समाधान में उसकी भूमिका को स्पष्ट करना है। अध्ययन के लिए गुणात्मक, वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक शोध-पद्धति अपनाई गई है। इसमें ग्रंथ के चयनित प्रसंगों का पाठ-विश्लेषण करते हुए सत्यनिष्ठा, धर्मपालन, आत्मसंयम, परामर्श, करुणा, उत्तरदायित्व और लोककल्याण जैसे मूल्यों की विवेचना की गई है। अध्ययन से यह प्रतिपादित होता है कि विवेकवान नेतृत्व केवल निर्णय लेने की क्षमता नहीं, बल्कि निर्णय के नैतिक औचित्य, उसके परिणामों तथा उससे प्रभावित व्यक्तियों के प्रति उत्तरदायित्व को समझने की प्रक्रिया है। वर्तमान शिक्षा, प्रशासन और सामाजिक जीवन में इन मूल्यों का समावेश नैतिक नेतृत्व के विकास में सहायक हो सकता है।

प्रस्तावना

नेतृत्व किसी व्यक्ति या समूह को निर्धारित लक्ष्य की ओर प्रेरित करने, उचित दिशा प्रदान करने तथा सामूहिक हित में निर्णय लेने की प्रक्रिया है। प्रभावी नेतृत्व की सफलता केवल अधिकार, शक्ति अथवा प्रशासनिक दक्षता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसमें नैतिकता, विवेक, संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। विशेष रूप से उन परिस्थितियों में, जहाँ व्यक्तिगत हित, सामाजिक अपेक्षाएँ और नैतिक दायित्व परस्पर टकराते हैं, नेतृत्व की वास्तविक परीक्षा होती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में धर्म, सत्य, कर्तव्य, आत्मसंयम और लोकमंगल को मानवीय जीवन के महत्त्वपूर्ण आधार माना गया है। श्रीरामचरितमानस इन मूल्यों को कथात्मक एवं काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। तुलसीदास ने विभिन्न पात्रों और प्रसंगों के माध्यम से यह दिखाया है कि कठिन परिस्थितियों में व्यक्ति का आचरण, उसकी निर्णय प्रक्रिया और उसके नैतिक आदर्श किस प्रकार उसके व्यक्तित्व को परिभाषित करते हैं।

श्रीराम का वनगमन, भरत का राजसिंहासन स्वीकार न करना, विभीषण का रावण को अनुचित मार्ग से हटने का परामर्श देना तथा हनुमान का लंका में परिस्थितियों के अनुरूप निर्णय लेना विवेक और नैतिकता के विविध पक्षों को उजागर करते हैं। इन प्रसंगों में नेतृत्व का मूल्यांकन केवल सफलता के आधार पर नहीं, बल्कि निर्णय के पीछे निहित उद्देश्य, साधन और नैतिक उत्तरदायित्व के आधार पर भी किया जा सकता है।

समकालीन संदर्भ में जब नेतृत्व के विभिन्न क्षेत्रों में नैतिक संकट, स्वार्थ, अधिकार के दुरुपयोग और उत्तरदायित्वहीनता जैसी चुनौतियाँ दिखाई देती हैं, तब श्रीरामचरितमानस में निहित नेतृत्व-मूल्यों का आलोचनात्मक अध्ययन प्रासंगिक हो जाता है।

वर्तमान समय में निर्णय लेने की प्रक्रिया अनेक जटिलताओं से प्रभावित होती है। राजनीतिक, प्रशासनिक, शैक्षिक और सामाजिक संस्थाओं में नेतृत्व करने वाले व्यक्तियों को प्रायः ऐसे विकल्पों का सामना करना पड़ता है, जिनमें व्यक्तिगत लाभ और सामूहिक हित के बीच संघर्ष उत्पन्न होता है। ऐसी स्थिति में केवल तकनीकी ज्ञान अथवा त्वरित निर्णय क्षमता पर्याप्त नहीं होती; निर्णय के नैतिक पक्ष का विवेकपूर्ण मूल्यांकन भी आवश्यक होता है।

श्रीरामचरितमानस का अध्ययन भारतीय सांस्कृतिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण से नेतृत्व के उन आदर्शों को समझने का अवसर प्रदान करता है, जिनमें कर्तव्यनिष्ठा, सत्य, त्याग, परामर्श और लोककल्याण को महत्त्व दिया गया है। रामचरितमानस पर आधारित प्रबंधन-संबंधी अध्ययनों में भी नैतिक नेतृत्व, संगठनात्मक व्यवहार और निर्णय प्रक्रिया की प्रासंगिकता पर विचार किया गया है (Khandelwal, 2017)।

अतः प्रस्तुत अध्ययन भारतीय ज्ञान परंपरा और समकालीन नेतृत्व-विमर्श के बीच वैचारिक संबंध स्थापित करने का प्रयास करता है।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. श्रीरामचरितमानस में विवेकवान नेतृत्व की अवधारणा का विश्लेषण करना।
2. चयनित प्रसंगों के माध्यम से निर्णय क्षमता और नैतिक द्वंद्वों के समाधान को समझना।
3. नेतृत्व में धर्म, कर्तव्य, सत्यनिष्ठा, आत्मसंयम और लोककल्याण की भूमिका का विवेचन करना।
4. भरत, विभीषण और हनुमान जैसे पात्रों के निर्णयों से प्राप्त नेतृत्व-संबंधी अंतर्दृष्टियों का अध्ययन करना।
5. वर्तमान शैक्षिक, प्रशासनिक एवं सामाजिक संदर्भ में इन मूल्यों की प्रासंगिकता स्पष्ट करना।

शोध-पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक, वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक प्रकृति का है। इसमें श्रीरामचरितमानस को प्राथमिक पाठ-स्रोत के रूप में ग्रहण किया गया है। ग्रंथ के चयनित प्रसंगों, पात्रों के आचरण और संवादों का विषयवस्तु-आधारित विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन में विवेकवान नेतृत्व, नैतिक निर्णय, कर्तव्यबोध, परामर्श, आत्मसंयम और लोककल्याण को प्रमुख विश्लेषणात्मक श्रेणियों के रूप में लिया गया है। संबंधित पुस्तकों तथा नेतृत्व और नैतिक निर्णय से जुड़े शोध-लेखों का उपयोग वैचारिक संदर्भ के रूप में किया गया है।

विवेकवान नेतृत्व की अवधारणा

विवेक का सामान्य अर्थ उचित और अनुचित, हितकारी और अहितकारी तथा तात्कालिक लाभ और दीर्घकालीन परिणाम के बीच अंतर करने की क्षमता है। नेतृत्व के संदर्भ में विवेक का आशय ऐसी निर्णय प्रक्रिया से है, जिसमें उपलब्ध विकल्पों, परिस्थितियों, नैतिक सिद्धांतों और संभावित परिणामों का समुचित मूल्यांकन किया जाए।

विवेकवान नेतृत्व के प्रमुख तत्त्व हैं—आत्मचिंतन, नैतिक स्पष्टता, परिस्थितियों की समझ, परामर्श ग्रहण करने की क्षमता, भावनात्मक संतुलन, उत्तरदायित्व और सामूहिक हित के प्रति प्रतिबद्धता।

श्रीरामचरितमानस में नेतृत्व का आदर्श विभिन्न पात्रों के आचरण के माध्यम से सामने आता है। श्रीराम का चरित्र मर्यादा, कर्तव्य और लोकमंगल से जुड़ा है; भरत का चरित्र सत्ता के प्रति अनासक्ति और नैतिक वैधता को महत्त्व देता है; विभीषण का आचरण अनुचित सत्ता का विरोध करने के साहस को प्रकट करता है; जबकि हनुमान परिस्थितियों के अनुरूप बुद्धि, साहस और कार्यकुशलता का परिचय देते हैं।

इस प्रकार, विवेकवान नेतृत्व को केवल एक आदर्श पात्र तक सीमित न रखकर विभिन्न परिस्थितियों में प्रकट होने वाले नैतिक निर्णयों के व्यापक स्वरूप में समझा जा सकता है।

श्रीरामचरितमानस में नैतिक द्वंद्व और निर्णय क्षमता

1. श्रीराम का वनगमन: कर्तव्य और व्यक्तिगत हित के बीच निर्णय

अयोध्याकांड में श्रीराम के वनगमन का प्रसंग नैतिक निर्णय की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। राजतिलक की तैयारी के बीच परिस्थितियाँ बदल जाती हैं और उन्हें चौदह वर्ष के वनवास का निर्णय स्वीकार करना पड़ता है। इस स्थिति में राजसत्ता, व्यक्तिगत सुख और पारिवारिक अपेक्षाओं के स्थान पर पितृवचन तथा मर्यादा के पालन को महत्त्व दिया जाता है।

इस प्रसंग को कर्तव्यनिष्ठ नेतृत्व के उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। श्रीराम का आचरण यह संकेत देता है कि नेतृत्व की नैतिक विश्वसनीयता केवल अनुकूल परिस्थितियों में नहीं, बल्कि कठिन समय में भी अपने सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्ध रहने से निर्मित होती है।

हालाँकि इस प्रसंग को आधुनिक संदर्भ में समझते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि प्रत्येक परिस्थिति में आज्ञापालन ही सर्वोच्च नैतिक विकल्प नहीं होता। आधुनिक संस्थागत जीवन में कर्तव्य के साथ न्याय, अधिकार, परिस्थितियों की समीक्षा और संबंधित व्यक्तियों के हितों का मूल्यांकन भी आवश्यक है। इसलिए इस प्रसंग से प्राप्त व्यापक शिक्षा सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता और व्यक्तिगत स्वार्थ पर नियंत्रण की है, न कि विवेकहीन आज्ञापालन की।

2. भरत का निर्णय: सत्ता से अधिक नैतिक वैधता

भरत का चरित्र विवेकवान नेतृत्व के एक विशिष्ट आयाम को प्रस्तुत करता है। उन्हें परिस्थितिवश अयोध्या का राज्य प्राप्त हो सकता था, किंतु वे इसे व्यक्तिगत उपलब्धि के रूप में स्वीकार नहीं करते। वे श्रीराम को वापस लाने का प्रयास करते हैं और अंततः उनकी पादुकाओं को सिंहासन पर स्थापित करके स्वयं प्रतिनिधि के रूप में राज्य का संचालन करते हैं।

यह प्रसंग स्पष्ट करता है कि नेतृत्व में अधिकार प्राप्त करना और उस अधिकार का नैतिक रूप से वैध होना दो अलग-अलग प्रश्न हैं। भरत के निर्णय में सत्ता के प्रति अनासक्ति, भ्रातृनिष्ठा, उत्तरदायित्व और वैध अधिकार के प्रति सम्मान दिखाई देता है।

समकालीन प्रशासनिक एवं शैक्षिक संस्थाओं में इस आदर्श की प्रासंगिकता यह है कि पद को निजी लाभ का साधन न मानकर सार्वजनिक अथवा संस्थागत दायित्व के रूप में देखा जाना चाहिए। विवेकवान नेता अपने अधिकारों की सीमाओं को समझता है और व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा से ऊपर संस्था के हित को स्थान देता है।

3. विभीषण का परामर्श: सत्य बोलने का साहस

सुंदरकांड और लंकाकांड के प्रसंगों में विभीषण रावण को सीता को सम्मानपूर्वक लौटाने तथा अनुचित मार्ग त्यागने की सलाह देते हैं। रावण उनकी बात स्वीकार नहीं करता और विभीषण अंततः उसका साथ छोड़ देते हैं।

यह प्रसंग नेतृत्व में परामर्श, आलोचनात्मक चिंतन और सत्य के प्रति प्रतिबद्धता का महत्त्व स्पष्ट करता है। किसी संगठन या राज्य का प्रमुख तभी विवेकपूर्ण निर्णय ले सकता है, जब वह असहमति को सुनने और अपने निर्णयों की समीक्षा करने के लिए तैयार हो।

विभीषण का आचरण यह भी संकेत देता है कि समूह के प्रति निष्ठा का अर्थ उसके प्रत्येक कार्य का समर्थन करना नहीं है। जब किसी समूह का निर्णय नैतिक दृष्टि से अनुचित हो, तब सत्य के पक्ष में खड़ा होना भी उत्तरदायित्व का अंग बन सकता है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विवेकवान नेतृत्व में केवल निर्णय लेने वाला व्यक्ति ही नहीं, बल्कि उसे उचित सलाह देने वाले सहयोगी भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नेतृत्व की गुणवत्ता इस बात से भी निर्धारित होती है कि वह आलोचना और परामर्श के प्रति कितना खुला है।

4. हनुमान का आचरण: परिस्थितिजन्य विवेक और रणनीतिक निर्णय

हनुमान का लंका जाना, सीता की खोज करना, उनसे संवाद स्थापित करना तथा रावण के दरबार में परिस्थितियों का सामना करना विवेक और कार्यकुशलता का उदाहरण प्रस्तुत करता है। उनके कार्यों में लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता के साथ परिस्थिति की पहचान, धैर्य, साहस और उपयुक्त रणनीति का समन्वय दिखाई देता है।

लंका में प्रवेश करने से लेकर सीता की खोज तक हनुमान तत्काल प्रतिक्रिया देने के बजाय अपने उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कार्य करते हैं। वे संवाद और सूचना के महत्त्व को समझते हैं तथा आवश्यकतानुसार अपने व्यवहार में परिवर्तन करते हैं।

नेतृत्व के संदर्भ में यह प्रसंग बताता है कि केवल साहस पर्याप्त नहीं है; साहस के साथ विवेक, समय की समझ और परिणामों का मूल्यांकन भी आवश्यक है। कठिन परिस्थितियों में प्रभावी निर्णय वही है, जो उद्देश्य के अनुरूप हो और उपलब्ध संसाधनों तथा जोखिमों को ध्यान में रखकर लिया जाए।

5. श्रीराम का आदर्श: उत्तरदायित्व और संवाद की भावना

श्रीरामचरितमानस के उत्तरकांड में श्रीराम के शासन और प्रजा के साथ संबंधों का वर्णन मिलता है। रामराज्य की कल्पना में लोककल्याण, सामाजिक संतुलन और शासक के उत्तरदायित्व को महत्त्व दिया गया है।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत पंक्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—

"जौं अनीति कछु भाखौं भाई।
तौ मोहि बरजहु भय बिसराई॥"

इन पंक्तियों में ऐसी नेतृत्व-दृष्टि का संकेत मिलता है, जिसमें अनुचित बात कहे जाने पर निर्भय होकर रोकने और अपनी बात रखने की गुंजाइश है। इसका आधुनिक अर्थ यह हो सकता है कि नेतृत्व को ऐसा वातावरण बनाना चाहिए, जहाँ सहयोगी और नागरिक बिना भय के अपनी असहमति व्यक्त कर सकें। यह लोकतांत्रिक संवाद, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व की भावना से जुड़ता है। विवेकवान नेता स्वयं को आलोचना से परे नहीं मानता, बल्कि उचित प्रतिक्रिया को निर्णय-सुधार का अवसर समझता है।

नैतिक द्वंद्वों के समाधान के प्रमुख सिद्धांत

उपर्युक्त प्रसंगों के विश्लेषण से नैतिक निर्णय के कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धांत सामने आते हैं।

प्रथम, कर्तव्य और स्वार्थ के बीच संतुलन: श्रीराम और भरत के प्रसंग व्यक्तिगत हित से ऊपर कर्तव्य तथा नैतिक वैधता को महत्त्व देने की प्रेरणा देते हैं।

द्वितीय, सत्य एवं परामर्श का महत्त्व: विभीषण का आचरण स्पष्ट करता है कि सही निर्णय के लिए सत्यपरक सलाह सुनना और आवश्यकता पड़ने पर अनुचित निर्णय का विरोध करना आवश्यक है।

तृतीय, परिस्थितियों के अनुरूप निर्णय: हनुमान का व्यवहार बताता है कि नैतिक उद्देश्य के साथ व्यावहारिक बुद्धि और परिस्थितिजन्य समझ भी आवश्यक है।

चतुर्थ, निर्णय के परिणामों के प्रति उत्तरदायित्व: विवेकपूर्ण नेतृत्व में निर्णय के संभावित प्रभावों को समझना तथा उससे प्रभावित व्यक्तियों के हितों पर विचार करना आवश्यक है।

पंचम, संवाद और आत्मसमीक्षा: नेतृत्व की नैतिक गुणवत्ता तब बढ़ती है, जब उसमें आलोचना स्वीकार करने, अपनी त्रुटियों की समीक्षा करने और आवश्यकता पड़ने पर निर्णय में सुधार करने की क्षमता होती है।

इन सिद्धांतों को आधुनिक नैतिक नेतृत्व की अवधारणाओं से संवाद स्थापित करने वाले वैचारिक आधार के रूप में देखा जा सकता है। तथापि, प्राचीन ग्रंथों की शिक्षाओं को वर्तमान सामाजिक और संस्थागत परिस्थितियों में लागू करते समय उनके संदर्भ का आलोचनात्मक मूल्यांकन आवश्यक है।

समकालीन जीवन में प्रासंगिकता

श्रीरामचरितमानस में निहित विवेकवान नेतृत्व के सिद्धांत शिक्षा, प्रशासन, सामाजिक संगठनों और व्यक्तिगत जीवन में उपयोगी हो सकते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक केवल विषय-वस्तु का संप्रेषक नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के आचरण, निर्णय क्षमता और नैतिक विकास को प्रभावित करने वाला मार्गदर्शक भी होता है। यदि शिक्षक अपने व्यवहार में निष्पक्षता, संवेदनशीलता, उत्तरदायित्व और संवादशीलता को स्थान देता है, तो विद्यार्थियों में विवेकपूर्ण निर्णय की प्रवृत्ति विकसित हो सकती है।

प्रशासनिक क्षेत्र में भरत का उदाहरण पद के प्रति उत्तरदायित्व तथा विभीषण का उदाहरण अनुचित निर्णयों के विरुद्ध नैतिक साहस की प्रेरणा देता है। इसी प्रकार, हनुमान का चरित्र लक्ष्य-निर्धारण, परिस्थितियों के मूल्यांकन और विवेकपूर्ण कार्यनीति के महत्त्व को स्पष्ट करता है।

वर्तमान समय में जब तकनीकी साधन निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित कर रहे हैं, तब मानवीय विवेक, नैतिक संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व का महत्त्व और बढ़ जाता है। तकनीक विकल्प प्रस्तुत कर सकती है, लेकिन उन विकल्पों के नैतिक औचित्य का मूल्यांकन करने के लिए मानवीय समझ और सामाजिक संदर्भ की आवश्यकता बनी रहती है।

इस प्रकार, श्रीरामचरितमानस का आलोचनात्मक एवं संदर्भपरक अध्ययन मूल्यपरक शिक्षा तथा उत्तरदायी नेतृत्व के विकास में योगदान दे सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि श्रीरामचरितमानस में विवेकवान नेतृत्व का स्वरूप कर्तव्यनिष्ठा, सत्य, आत्मसंयम, परामर्श, त्याग, परिस्थितिजन्य समझ और लोककल्याण जैसे मूल्यों के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। श्रीराम का वनगमन कर्तव्य के प्रति प्रतिबद्धता, भरत का निर्णय सत्ता से अधिक नैतिक वैधता, विभीषण का आचरण सत्य के पक्ष में खड़े होने का साहस तथा हनुमान का व्यवहार व्यावहारिक विवेक और रणनीतिक दक्षता को सामने लाता है।

इन प्रसंगों से यह भी स्पष्ट होता है कि नैतिक निर्णय केवल किसी नियम का पालन करना नहीं, बल्कि परिस्थितियों, दायित्वों और संभावित परिणामों के बीच विवेकपूर्ण संतुलन स्थापित करना है। एक प्रभावी नेता वह है, जो व्यक्तिगत हित से ऊपर सामूहिक कल्याण को स्थान दे, उचित परामर्श स्वीकार करे और अपने निर्णयों के प्रति उत्तरदायी रहे।

अंततः श्रीरामचरितमानस में निहित नेतृत्व-मूल्यों का समकालीन उपयोग तभी सार्थक होगा, जब उन्हें वर्तमान लोकतांत्रिक, शैक्षिक और सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप आलोचनात्मक दृष्टि से समझा जाए। इस दृष्टि से विवेकवान नेतृत्व का विकास केवल प्रशासनिक दक्षता का विषय नहीं, बल्कि नैतिक चरित्र, मानवीय संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व के समन्वित विकास की प्रक्रिया है।

संदर्भ सूची

1. तुलसीदास, गोस्वामी, *श्रीरामचरितमानस*, गीता प्रेस, गोरखपुर
2. खंडेलवाल, एन. एम. (2017), मैनेजेरियल लेसन्स फ्रॉम रामचरितमानस [श्रीरामचरितमानस से प्रबंधकीय शिक्षाएँ]। ओम पब्लिकेशन्स।
3. गोहिल, बी., एवं जैन, एल. (2024), रावण को शूर्पणखा का उपदेश: संगठनों के नैतिक प्रबंधन के लिए एक मार्गदर्शक कार्य (ग्रामीण संस्थानों के संदर्भ में), एजुकेशन एंड मैनेजमेंट स्टडीज़, 16(3)। https://doi.org/10.37867/te160308

4. भाल, के. टी., एवं शर्मा, पी. (2001), भारतीय प्रबंधकों द्वारा नैतिक निर्णय-निर्धारण: अवधारणाओं की पहचान, उनका मापन एवं सत्यापन, मैनेजमेंट एंड लेबर स्टडीज़, 26(3), 145–163, https://doi.org/10.1177/0258042X0102600301

5. मुनियापन, बी., एवं सतीपथी, बी. (2010), प्रबंधकों के लिए प्राचीन भारतीय ज्ञान: प्रबंधकीय प्रभावशीलता के विकास में वाल्मीकि रामायण की प्रासंगिकता, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन कल्चर एंड बिज़नेस मैनेजमेंट, 3(6), 645–668.

Cite the Article:

दुबे, डॉ. वागीश . (2026). श्रीरामचरितमानस में विवेकवान नेतृत्व और निर्णय क्षमता का अध्ययन. The Research Dialogue, 5(3), 221–226.
DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i3.24

Disclaimer: The views, opinions, interpretations, analyses, conclusions, recommendations, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not necessarily represent the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) bear full responsibility for the originality, accuracy, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring compliance with applicable academic and ethical standards, including those relating to plagiarism, AI-generated or AI-assisted content, copyright infringement, data fabrication or falsification, and other forms of research or academic misconduct.